अभ्यास प्रश्न-पत्र–1

खंड 'अ'– बहुविकल्पीय प्रश्न

अपठित गद्यांश

1. (*i*) (घ) (*ii*) (घ) (*iii*) (घ)
(*iv*) (क) (*v*) (ग)

अपठित पद्यांश

2. (*i*) (ग) (*ii*) (ख) (*iii*) (क)
(*iv*) (घ) (*v*) (ख)

अथवा

(*i*) (घ) (*ii*) (ख) (*iii*) (ख)
(*iv*) (क) (*v*) (ग)

व्यावहारिक व्याकरण

3. (*i*) (क)

(*ii*) 'वह कौन-सी पुस्तक है <u>जो आपको पसंद है</u>।' रेखांकित उपवाक्य है–

(क) संज्ञा उपवाक्य
(ख) सर्वनाम उपवाक्य
(ग) क्रिया उपवाक्य
(घ) विशेषण उपवाक्य

उत्तर–(घ)

(*iii*) (ख) (*iv*) (घ) (*v*) (ख)

4. (*i*) (ख) (*ii*) (घ) (*iii*) (ग)
(*iv*) (ख) (*v*) (ख)

5. (*i*) (ख) (*ii*) (ग) (*iii*) (ख)
(*iv*) (ख) (*v*) (ख)

6. (*i*) (ख) (*ii*) (ग) (*iii*) (ख)
(*iv*) (ख) (*v*) (ख)

खंड 'ब'– वर्णनात्मक प्रश्न

लेखन

उत्तर–

7. (क) बढ़ती जनसंख्या का भयावह रूप

प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संसाधन होते हुए भी हमारा देश विकासशील देशों की श्रेणी में आता है। इसका सबसे बड़ा कारण है– जनसंख्या वृद्धि। जनसंख्या वृद्धि के अनेक कारण हैं। सबसे प्रमुख कारण है– लोगों का अशिक्षित होना। अशिक्षा के कारण लोग अपने बच्चों का विवाह छोटी उम्र में कर देते हैं और फिर संतान को ईश्वर का वरदान मानकर जनसंख्या वृद्धि में सहयोग करते हैं। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि देश लोगों की संख्या के अनुरूप खाद्यान्न और उद्योग-धंधे उपलब्ध नहीं करा पाता और आर्थिक प्रगति बाधित हो जाती है। जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए सरकार ने राष्ट्रीय स्तर पर परिवार कल्याण कार्यक्रम चलाया है तथा लड़के और लड़कियों के विवाह की आयु भी क्रमशः 21 और 18 वर्ष निश्चित की हुई है। सरकार अब लड़कियों की विवाह की वर्तमान आयु 21 वर्ष तक बढ़ाने के विकल्प पर भी विचार कर रही है। किंतु सरकार के प्रयासों के साथ-साथ बढ़ती जनसंख्या के इस भयावह रूप को रोकने के लिए जन-जागरण की अधिक आवश्यकता है।

(ख) भारतीय समाज और अंधविश्वास

अंधविश्वास का शाब्दिक अर्थ है– आँख मूँदकर बिना किसी सोच-विचार या उचित-अनुचित का निर्णय लिए किसी सिद्धांत या मान्यता पर विश्वास कर लेना। अंग्रेज़ी में अंधविश्वास को 'Blind Faith' कहते हैं। यानी कि सामाजिक तौर पर परंपरागत रूढ़िवादी विचारों से प्रभावित होकर किए जाने वाले कार्यों को, जिनमें कारण अज्ञात होता है, अंधविश्वास कहते हैं। यह व्यक्ति, समाज या किसी राष्ट्र के विकास में बाधक होता है। अंधविश्वास या धर्म जनित भय के चंगुल में फँसा इनसान व्यष्टि से लेकर समष्टि तक सबके स्वाभाविक विकास को अवरुद्ध करता है। तुलसीदास जी के अनुसार,

'भय बिनु होई न प्रीत', यानी भय इनसान को कार्य करने के लिए प्रेरित करने का सर्वाधिक प्रभावी साधन है। मगर जब इसी भय की अधिकता हो जाती है तो वह अंधविश्वास का रूप ले लेता है, जो मानव-जाति के पतन का कारण बनता है। उसकी प्रगति का बाधक बनता है। अंधविश्वास को दूर करने के लिए जन-जागृति की नितांत आवश्यकता है।

स्वयं पर विश्वास तथा कर्म पर भरोसा करके ही व्यक्ति अंधविश्वास से उबर सकता है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि जैसे-जैसे लोगों में आत्मविश्वास पैदा होगा तथा शिक्षा का प्रचार-प्रसार बढ़ेगा, वैसे-वैसे समाज इस अंधविश्वास के दंश से मुक्त होकर विकास के पथ पर अग्रसर होगा।

(ग) भारतीय किसान

अपने देश की धरती को मातृभूमि का नाम दिया जाता है, क्योंकि उसमें जन्म लेकर, उसका अन्न-जल ग्रहण करके हम जीवन व्यतीत करते हैं, किंतु मातृभूमि की कोख से अन्न पैदा करने की मेहनत जो किसान करता है, वह भी समान रूप से पूजनीय है। अनाज उगाने के लिए किसान को किन कष्टों को सहना पड़ता है, हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। वह कठोर दिनचर्या का पालन करता है। उसके लिए धूप-छाँव, सरदी-गरमी में कोई अंतर नहीं। उसे हर हाल में निरंतर मेहनत करनी होती है। अपना खून-पसीना एक करके वह फ़सलें उगाता है। बीज बोने से लेकर फ़सल काटने तथा बाज़ार में पहुँचाने तक उसका जीवन पिसता ही रहता है। यही कारण है कि हर वर्ष बड़ी संख्या में किसानों की आत्महत्या के समाचार सुनने को मिलते रहते हैं। बेचारा गरीब किसान कर्ज़ लेकर खेती करता है और यदि कुछ हाथ न लगे तो परिवार का निर्वाह करना भी उसके लिए असंभव हो जाता है। ऐसे में किसानों के लिए उचित नीतियाँ बननी चाहिए तथा उन पर सख्ती से अमल भी होना चाहिए। सरकार द्वारा उसे अच्छे बीज, खाद व अन्य सुविधाओं के अतिरिक्त फ़सल बीमा योजना भी दी जानी चाहिए, ताकि वह निश्चिंत होकर अपना जीवन-निर्वाह कर सके।

8. अपने इलाके में बिजली कटौती की शिकायत करते हुए संपादक को पत्र–

अ०ब०स० नगर

नई दिल्ली

दिनांक : 14 जून, 20XX

सेवा में

संपादक महोदय

दैनिक जागरण

नोएडा

विषय– अ०ब०स० नगर में बिजली कटौती के संबंध में।

महोदय

मैं आपके समाचार-पत्र के माध्यम से 'दिल्ली विद्युत बोर्ड' के अधिकारियों तक अपने इलाके अ०ब०स० नगर में उत्पन्न बिजली संकट के बारे में कुछ बातें पहुँचाना चाहता हूँ। अनुरोध है कि आप अपने समाचार-पत्र में इसे उचित स्थान देने की कृपा करें।

यूँ तो पूरी दिल्ली में ही इन दिनों बिजली की भारी समस्या है, पर अ०ब०स० नगर की ओर से तो 'दिल्ली विद्युत बोर्ड' के अधिकारियों ने अपनी आँखें ही मूँद ली हैं। एक तो इन दिनों गरमी भी भयंकर पड़ रही है, ऊपर से बिजली कटौती की आफ़त। बिजली न होने से पंखे-कूलर, ए०सी० तो चलते हैं नहीं, उस पर फ्रिज में रखा खाने-पीने का सामान भी खराब हो जाता है। उसे फेंकना पड़ता है। कभी-कभार तो बिजली का वोल्टेज इतना कम होता है कि बिजली के उपकरण ठीक से काम नहीं करते। वैसे तो ग्रीष्मावकाश हो चुका है, पर विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए यह किसी विपदा से कम नहीं है। वे मोमबत्ती की रोशनी में पढ़ने के लिए मज़बूर हैं, जो कि उनकी आँखों के लिए उचित नहीं है।

महाशय, हमारे इलाके के लोग कई बार शिकायत कर चुके हैं, लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। ऐसा सुनने में आया है कि जिस क्षेत्र के लोग रिश्वत पहुँचाते हैं, उस क्षेत्र में बिजली कटौती न के बराबर होती है। ऐसे सरकारी अधिकारी और कर्मचारी देश के लिए कलंक हैं।

मेरा आपसे अनुरोध है आप अपने पत्र के माध्यम से हमारे इलाके की इस समस्या को भारत सरकार के अधिकारियों के समक्ष लाने में सहयोग करें।

सधन्यवाद!

भवदीय

क०ख०ग०

अथवा

अपने छोटे भाई को पढ़ाई के साथ-साथ सेहत पर ध्यान देने की सलाह देते हुए पत्र–

अ०ब०स० छात्रावास

नई दिल्ली

दिनांक : 8 अक्टूबर, 20XX

प्रिय अनुज

शुभाशीष!

मैं यहाँ ठीक हूँ और आशा करता हूँ कि तुम भी ठीक होगे तथा पढ़ाई-लिखाई नियमित रूप से कर रहे होगे। पढ़ाई-लिखाई के प्रति तुम्हारी लगन देखकर मुझे हमेशा तुम पर गर्व होता है, पर पिता जी ने बताया था कि स्वास्थ्य के प्रति तुम काफ़ी लापरवाह हो। मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि जब तक स्वास्थ्य अच्छा न हो, व्यक्ति मन लगाकर कुछ भी नहीं कर सकता है। प्रातःकालीन भ्रमण तथा प्राणायाम दो ऐसी चीज़ें हैं, जो मनुष्य को आजीवन स्वस्थ बनाए रख सकती हैं।

तुमको इस ओर तुरंत ध्यान देना चाहिए। सुबह जल्दी उठो और घूमने अवश्य जाओ। थोड़ा-सा व्यायाम भी कर लो तो और भी अच्छा है। घर आकर प्राणायाम अवश्य करो, इससे तुम्हारी बुद्धि प्रखर होगी।

मुझे आशा है कि तुम मेरे सुझावों को अमल में लाओगे। शेष सब सामान्य है। पत्र लिखते रहा करो।

तुम्हारा अग्रज

क०ख०ग०

9\. *विद्यार्थी स्वयं करें।*

10. 'बेटी बचाओ, देश बचाओ'– विषय पर विज्ञापन–

"बेटी हम सबके जीवन का मूल है।
उसे मारना मानवता की भूल है।।"

बेटी बचाओ,
देश बचाओ!

बेटी से मिलेगा भारत देश को दम,
बेटी नहीं है बेटे से किसी हाल में कम।

भारत सरकार द्वारा जनहित में जारी

अथवा

नगर निगम की ओर से छठ पर्व पर शुभकामना संदेश–

संदेश

पूर्वाह्न : 9 बजे
20–10–20XX

समस्त नगरवासी

सभी नगरवासियों को लोक आस्था के महापर्व छठ की हार्दिक शुभकामनाएँ। सूर्य देव आप सभी नगरवासियों को अपनी ऊर्जा से ऊर्जावान बनाएँ एवं धन-धान्य से संपन्न करें।

धन्यवाद
नगर निगम